द्वितीय वर्ष

अंक – 9

संकुल स्रोत केन्द्रों में मासिक बैठक हेतु

चर्चा पत्र – फरवरी 2017

डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान

द्वितीय वर्ष 2016-17

द्वितीय अकादमिक मानिटरिंग जनवरी 27 से फरवरी 06 तक

राज्य परियोजना कार्यालय, राजीव गाँधी शिक्षा मिशन, रायपुर छ.ग.

आमुख

इस माह फोकस शालाओं में द्वितीय मानिटरिंग की जा रही है | आपको इस चर्चा पत्र के साथ चर्चा हेतु बैठते वक्त तक यह मानिटरिंग संपन्न हो चुकी होगी | पूरी उम्मीद है कि फोकस शालाओं में परिणामों में आशातीत सुधार हुआ होगा | आप सभी ने इस हेतु काफी मेहनत की है | हाल ही में हुए असर के सर्वे में भी छत्तीसगढ़ के परिणामों में कुछ सुधार दिखाई दे रहा है | आर.टी.ई. वाच के अंतर्गत आयोजित उपलब्धि सर्वे में भी कुछ सुधार दिखाई दे रहे हैं | अपने इस मानिटरिंग के अनुभवों को हमारे साथ साझा करें और आपको प्राप्त सुझावों पर अमल भी करना शुरू करें | डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत की जा रही दो बार अकादमिक मानिटरिंग से शाला में सुधार संभव नहीं होगा | वे केवल आपके कार्यों को देखने एक बाह्य संस्था के रूप में, आपको प्रोत्साहित करने एवं काम को बेहतर करने हेतु सुझाव देने आ रहे हैं | असली काम तो हम और आप जैसे विभाग के लोगों को ही करना होगा | इस बात का ध्यान रखेंगे |

गत माह आपके साथ मिलकर दो रोचक अनुभव हुए | शाला विकास समिति के प्रशिक्षण मैनुअल तैयार करने आपसे व्हात्सेप्प के माध्यम से सुझाव माँगा गया | आपसे प्राप्त सुझावों के आधार पर प्रशिक्षण की डिजाइन एवं प्रशिक्षण सामग्री दो दिनों के भीतर तैयार की गयी | यदि आप सभी सहमत हों तो टेक्नोलोजी का उपयोग कर हम ऐसे कुछ और कार्य कर सकते हैं | जैसे यदि आप चर्चा पत्र पर अपने अभिमत के वीडियोज, बैठक के आयोजन के कुछ दृश्य, आपके साथियों के विचारों को एकत्र कर कुछ बेहतर क्वालिटी के वीडियो हमारे साथ साझा कर हमें फीडबैक दे सकते हैं | यदि आपके स्तर पर ऐसे वीडियो बनाया जाना संभव न हो तो भाटापारा के श्री केशवराम वर्मा, पंचम दीवान उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय (9907766504) को बेहतर क्वालिटी के वीडियोज भेजने हेतु संपर्क कर सकते हैं | इसी प्रकार हमने व्हात्सेप्प में मोबाइल से प्रोजेक्टर बनाने का आइडिया शेयर किया था | इतने में प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के एक साथी ने उसका स्केच शेयर किया | कुछ ने इंटरनेट से खोज कर बनाने के तरीकों का वीडियो साझा किया | कुछ लोगों ने बनाना शुरू किया और अपनी शंका सामने रखते रहे | हमारे साथियों ने ही आपस में एक दूसरे से चर्चा कर काम को आगे बढ़ाया | किसी का चित्र धुंधला था, किसी को अच्छे लेंस की आवश्यकता थी, किसी को मोबाइल सीधे कहाँ रखना है, नहीं मालूम चल रहा था | पर शाम होते होते कुछ लोगों ने सफलतापूर्वक अपने अपने प्रोजेक्टर बना लिए | कुछ ने तो एस.सी.ई.आर.टी. के प्रदर्शनी में तैयार प्रोजेक्टर दिखाने लेकर आ गए | यह टेकनोलोजी के बेहतर उपयोग का एक अच्छा उदाहरण है | कुछ लोग अभी भी इसके पोटेंशियल को समझ नहीं पाए हैं |

मार्च में आपके विद्यार्थियों का समेटिव आकलन होना है | इसके लिए भी आप बच्चों को खूब तैयारी करवा रहे होंगे | छत्तीसगढ़ राज्य में स्कूली शिक्षा में गुणवत्ता लाने का कार्य आपके अथक प्रयासों एवं सकारात्मक सोच से ही संभव हो सकेगा | आइए हम सब मिलजुलकर इस दिशा में पहल करें, आगे बढ़ें और छत्तीसगढ़ में स्कूली शिक्षा को को एक बेहतर मुकाम तक पहुंचाएं |

एजेंडा # 1: शिक्षक प्रशिक्षण की प्रभाविता

आपमें से बहुतों को अपने–अपने प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी का प्रतिनिधित्व करते हुए हाल ही में राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद व्दारा आयोजित एक दिवसीय सेमीनार में सहभागिता लेने का अवसर मिला होगा | सीमित अवधि के भीतर ही लगभग छह हजार से अधिक पीएलसी के सदसयों ने इस सेमीनार में सहभागिता ली | इस सेमीनार से आपको बहुत कुछ सीखने को मिला होगा | कुछ बातें जिन्हें हमें अपने–अपने क्षेत्र में प्रशिक्षण आदि आयोजित करते समय अपनाना चाहिए, वे हैं –

१. प्रशिक्षण कार्यक्रम ठीक निर्धारित समय में प्रारंभ हो जाना चाहिए और सभी प्रतिभागियों को समय पर प्रशिक्षण में उपस्थित होने का कल्चर विकसित करना चाहिए |
२. प्रतिभागियों को यह महसूस होना चाहिए कि उन्होंने देर से आकर बहुत कुछ खोया है |
३. पूरे प्रशिक्षण कार्यक्रम की डिजाइन इस प्रकार होनी चाहिए कि मिनट टू मिनट कार्यों के लिए पूरी तैयारी हो | प्रशिक्षण में ऐसा कही भी नहीं होना चाहिए कि प्रतिभागीयों का एक मिनट भी व्यर्थ में जाया हो |
४. प्रशिक्षक में यह गुण होना चाहिए कि वे सभी प्रतिभागियों को बांधे रख सकें और सभी उनकी बातों पर ध्यान दें |
५. प्रतिभागियों को बेहतर कार्यों के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और एक दूसरे के बेहतर कार्यों की शेयरिंग के लिए भी मंच उपलब्ध कराना चाहिए |
६. प्रशिक्षण में टेक्नोलोजी का बेहतर उपयोग सुनिश्चित किया जाना चाहिए और अच्छे वीडियोज दिखाने चाहिए |
७. स्त्रोत व्यक्तियों को अच्छी तैयारी करनी चाहिए और एक ही समय में एक से अधिक स्त्रोत व्यक्ति उपलब्ध कराते हुए टीम टीचिंग को बढ़ावा देना चाहिए |
८. प्रशिक्षण के दौरान अनावश्यक बहस करने वालों को बिलकुल भी प्रोत्साहित न करें क्योंकि प्रशिक्षण के बाद सभी को कुछ न कुछ अपने साथ लेकर जाते हुए कक्षा में उपयोग करना चाहिए |
९. प्रशिक्षण के दौरान समूह में एक दूसरे के साथ कार्य करने हेतु एवं ब्रेनस्टोर्मिंग का अवसर अवश्य प्रदान करें |
१०. हर बार अपने प्रशिक्षण में पिछले अनुभवों के आधार पर सुधार एवं परिवर्तन करते रहना चाहिए |

समूह चर्चा– उपरोक्त आधार पर आप अपने संकुल या विकासखंड स्तरीय प्रशिक्षण में क्या–क्या सुधार करेंगे ? चर्चा कर निर्णय लेते हुए लागू करें | उपरोक्त के अलावा भी कुछ ऐसी बातें सोचें जो प्रशिक्षण के सुधार के लिए आवश्यक हैं |

क्या आप जानते हैं कि प्रशिक्षण की क्वालिटी को सबसे ज्यादा नुकसान हमारे यहाँ कौन करते हैं ? आपने हर प्रशिक्षण के अंत में कुछ लोगों को यह कहते अवश्य सुना होगा कि हमने आज तक जिन्दगी में ऐसा प्रशिक्षण कभी नहीं लिया | इससे बेहतर और कोई प्रशिक्षण नहीं हो सकता | यदि आपके व्दारा लिए गए प्रशिक्षण का आपके लिए आगे कोई उपयोग नहीं है या आप कक्षा में बच्चों की बेहतरी के लिए प्रशिक्षण का उपयोग नहीं कर रहे हैं तो वाकई में ऐसे प्रशिक्षण का कोई उपयोग नहीं है | ऐसा बोलने वाले लोग ही प्रशिक्षण को बेहतर करने से रोकते हैं और प्रशिक्षकों को गलत फीडबैक देकर उनमे अनावश्यक अहम भी भरते हैं | प्रशिक्षण के माध्यम से कक्षाओं में सुधार के लिए हमेशा सही–सही फ़ीडबैक अवश्य देवें |

एजेंडा # 2: मासिक बैठकों का आयोजन

राज्य में शिक्षकों के सतत क्षमता विकास की दृष्टि से संकुल स्तर पर मासिक बैठकों का आयोजन किया जा रहा है | इन बैठकों में शिक्षकों को अकादमिक चर्चाओं के लिए कुछ मुद्दे देने के उद्देश्य से ही राज्य स्तर से नियमित रूप से निर्धारित समय पर चर्चा पत्र के रूप में तैयार कर भेजे जा रहे हैं | इन चर्चा पत्रों का लाभ सभी शिक्षक ले सकें, इस हेतु निम्नलिखित प्रक्रियाओं का पालन करें–

- अपने संकुल में प्रत्येक शनिवार को इन मुद्दों पर चर्चा के लिए बैठकों का आयोजन करें |
- प्रथम शनिवार को प्राथमिक स्तर के आधे शिक्षक एवं द्वितीय शनिवार को शेष शिक्षकों को संकुल में आमंत्रित करें |
- तृतीय एवं चतुर्थ शनिवार को उच्च प्राथमिक स्तर के आधे–आधे शिक्षकों को विषय के आधार पर आमंत्रित करें |
- ऐसा इसलिए करना आवश्यक है ताकि इन बैठकों की वजह से शालाएं बंद न होने पाए |
- निर्धारित तिथि में गुणवत्ता पर चर्चा करने हेतु पूरे दिन का समय निर्धारित कर गहन चर्चा सत्र आयोजित किए जाएं |
- अपने संकुल स्त्रोत केंद्र में पर्याप्त संसाधन एकत्र कर उपयोग एवं आवश्यकतानुसार सन्दर्भ के लिए रखें |
- अपने संकुल के किसी शिक्षक को इन बैठकों से वंचित न रखें, सभी की उपस्थिति अनिवार्य है |
- संकुल में आयोजित इन बैठकों में केवल अकादमिक चर्चाएँ ही आयोजित की जाएं, अन्य मुद्दों को दूर ही रखें |
- चर्चा पत्र राज्य स्तर से तैयार कर व्हात्सेप्प समूह – चर्चा पत्र, सर्व शिक्षा अभियान के वेबसाईट में भी डाला जाता है |
- आप सीधे इन स्थलों से इसे डाउनलोड कर सकते हैं | राज्य स्तर से जिले एवं संकुल से लेकर शिक्षकों तक बेहतर नेटवर्किंग करते हुए चर्चा पत्रों को सीधे शिक्षकों तक पहुँचाने में अपना योगदान देवें |
- ऐसा करते हुए आप शिक्षकों को इन बैठकों में चर्चा पत्र का वाचन कर तैयारी के साथ आने को कह सकते हैं |
- चर्चा पत्र की शेयरिंग के लिए तैयार व्हात्सेप्प समूह में केवल चर्चा पत्र लेने, उसमे दिए गए सामग्री के आधार पर शाला में किए गए कार्यों की जानकारी देने, चर्चा पत्र के लिए आलेख जमा करने से लेकर फीडबैक देने के लिए इस समूह का उपयोग करें |
- संकुल एवं उससे ऊपर विभिन्न स्तरों पर शिक्षकों को प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी गठित करने हेतु सहयोग देवें |
- आप चाहें तो संकुलों के बैठकों के आधार पर विकासखंड पर समीक्षा बैठक एवं विकासखंडों की समीक्षा बैठकों के आधार पर जिले में विशेषकर डाईट में ऐसी बैठकें आयोजित कर सकते हैं |
- डाईटस व्दारा यह सूचित किया गया है कि कुछ संकुल ऐसी बैठकें आयोजित नहीं कर रहे हैं, कुछ संकुल समन्वयक अपने शिक्षकों से यह कह रहे हैं कि उनसे पूछे जाने पर इन बैठकों का नियमित आयोजित होना बताया जाए |
- निकट भविष्य में सभी शिक्षकों का कार्य निष्पादन का मूल्यांकन (Performance appraisal) किए जाने का प्रावधान किया जा रहा है | जो शिक्षक अपने आपको अद्यतन नहीं रखेंगे उन्हें इस मूल्यांकन में दिक्कतें आएंगी |
- अपने समूह को सक्रिय करते हुए उन्हें राज्य स्तर से जोड़ने हेतु 9425507257 को अपने ग्रुप में शामिल करें | केवल वे ही ग्रुप शामिल हों जो शिक्षा के बारे में सोच रहे हों | ना कि Good morning, Good night या फूल भेजने में |

एजेंडा # 3: इतिहास शिक्षण में नवीन प्रयोग

बिलासपुर के कोटा विकासखंड के श्री रघुबंश सिंह ने इतिहास को पढ़ाने के लिए पद्यों का उपयोग कर रहे हैं | उनमे किसी भी पाठ या गद्य को पद्य में रूपांतरित करने की अद्भुत क्षमता है | वे इतिहास को रोचक बनाने एवं पद्य के रूप में प्रस्तुत कर बच्चों के समक्ष इस सोच के साथ रखते हैं कि बच्चे इन्हें जल्दी और स्थाई रूप से अपने स्मृति में रख सकेंगे | उनसे 9406441270 पर संपर्क किया जा सकता है | इस अंक में बौद्ध धर्म के बारे में जानकारी दी जा रही है | आपको इनकी कक्षाओं के वीडियोज हम व्हात्सेप्प पर शेयर करेंगे |

जन्म से पहले,
भविष्य का संकेत दिया |
कपिल वस्तु के निकट,
लुम्बिनी में जन्म लिया ||

पिता जिसके शुद्धोधन,
माता थी माया |
बचपन में वह,
सिद्धार्थ कहलाया ||

पालने में माँ से,
एक और नाम पाया |
गौतमी प्रजाति से,
गौतम भी कहलाया||

बीमार, वृद्ध, मृत देखकर,
सिद्धार्थ की हुआ भान |
आगे चलकर होगा,
सबकी दशा इनके समान||

इन बैटन ने सिद्धार्थ को,
किया काफी परेशान |
सन्यासी को देखकर,
मिला उनको ज्ञान ||

ज्ञान पाने के लिए गौतम,
पीपल पड़े के निचे रहा |
तभी से लोगों न,
पीपल को बोंधिवृक्ष कहा ||

ज्ञान पाने के लिए गौतम,
पीपल पेड़ के नीचे रहा |
तभी से लोगो न,
पीपल को बोधिवृक्ष कहा ||

जिस स्थान पर गौतम ने,
सच्चा ज्ञान पाया |
वह स्थान अब,
बोधगया कहलाया ||

सच्चे मन से,
ज्ञान हुआ शुद्ध |
अब कहलाया वह,
महात्मा गौतम बुद्ध ||

गौतम बुद्ध ने धारण किया,
भिक्षुओं का भेष |
सारनाथ में दिया,
अपना प्रथम उपदेश ||

बौद्ध धर्म के अनुसार,
जीवन में हैं जो कुछ आता जाता |
उससे लगता है,
मनुष्य हैं अपने भाग्य निर्माता ||

बौद्ध धर्म ने,
धार्मिक जटिलता को गलत बताया |
इस कारण इसमें,
जाति–पांति, उच्च–नीच का भाव नही आया ||

ईश्वर और आत्मा के सम्बन्ध में,
बुद्ध ने कुछ नही बतलाया |
इस कारण बौद्ध धर्म,
अनीश्वरवादी धर्म कहलाया||

धर्म की सार बातें,
सरलता से समझ में आयें |
बुद्ध ने अपना विचार, जन भाषा में ही समझाएं ||
विचारो से प्रभावित लोग,
बौद्ध संघों में थे सक्रिय |
सादगी एवं सरलता से,
विदेशों में हुए लोक प्रिय ||

जीवन क्षण भंगुर है,
अब ऐसा मानकर |
उन्होंने घर छोड़ दिया,
दुनिया को नश्वर जानकर ||

29 वर्ष की आयु में,
ग्रहण किया सन्यास |
कठोर तपस्या से बुझी,
सच्चे ज्ञान की प्यास ||

सच्चे ज्ञान की खोज ने,
गौतम के ध्यान खींचें ||
कठोर तपस्या की,
पीपल पेड़ के नीचे ||

सच्चा ज्ञान प्राप्त हुआ,
छः वर्षों के बाद |
ज्ञान मिलने पर हुआ,
मोह माया से आजाद ||

कठोर तपस्या से,
गौतम ने जो ज्ञान पाया |
वह सच्चा ज्ञान,
सम्बोधि कहलाया ||

सारनाथ में बुद्ध ने,
अपने साथियों को दिया ज्ञान |
80 वर्ष की आयु में,
कुशीनगर में मिला निर्वाण ||

बौद्ध धर्म में,
आर्य सत्य हैं चार |
ए सच्चाईया हैं,
बौद्ध धर्म के आधार ||

जीवन के सम्बन्ध में,
जो थे बुद्ध के कथ्य |
बौद्ध धर्म में कहा गया,
उनको चार आर्य सत्य ||

संसार दुखमय है,
तृष्णा हैं इसका कारण |
निर्वाण पा सकते हैं,
अपनाकर सही आचरण ||

महात्मा बुद्ध ने कहा है,
न अधिक तप, न भोग विलास |
जीवन को रखो,
मध्यमार्ग के आस-पास ||

कोरिया, तिब्बत श्रीलंका,
चीन और जापान |
बौद्ध धर्म फैला जहाँ,
ये है महत्वपूर्ण स्थान ||

बौद्ध धर्म की शिक्षा,
जिस रूप में सामने आया |
तीन ग्रंथों में एकत्रित,
त्रिपतक कहलाया ||

छत्तीसगढ़ में सातवी सदी की,
सामग्री मिलती है भरपूर ||
प्रमुख बौद्ध केंद्र था
दक्षिण कोसल की राजधानी सिरपुर ||

महावीर और बुद्ध के अलावा,
कई धार्मिक विचारक आए ||
आहिंसा, प्रेम और करुणा को,
सभी धर्मों का सार बताए ||

सभी धर्म मूलतः,
अच्छाइयों का देते है ज्ञान |
सभी धर्मों का हो,
आदर और सम्मान ||

एजेंडा # 4: मेरी कक्षा के कुछ अनुभव

मुझे बच्चों को पढ़ाना बहुत अच्छा लगता हैं | प्रत्येक प्रकरण पढ़ाते समय मैं यह कोशिश करती हूँ कि उस प्रकरण के बारे में पाठ्यपुस्तक में दी गई जानकारी के अतिरिक्त अन्य स्रोतों से भी नवीन, रोचक एवं महत्वपूर्ण जानकारी एकत्रित कर बच्चों के साथ साझा कर सकूँ | इस हेतु मोबाईल से इन्टरनेट बहुत काम आता है | इन्टरनेट से किसी भी विषय में ढेर सारी जानकारियां एवं वीडियो हमें देखने को मिलते हैं | वीडियो देखने से विषय वस्तु को गहराई से समझाने में हमें मदद मिलती हैं | अपने साथी शिक्षकों से भी कई बार अच्छे आइडियाज मिल जाते हैं |

एक बार मुझे सुबह की एसेंबली के दौरान किसी समसामयिक मुझे पर बच्चों से प्रस्तुतीकरण करवाना था | मैंने मोबाइल के अधिक उपयोग से नुकसान विषय पर नाटक प्रस्तुत करने का निर्णय लिया | नाटक कैसे किया जाए एवं किन-किन मुद्दों को लेना हैं, पर बच्चों से लगातार चर्चा होती रही | एक बिंदु जिसमें यह दिखाना था कि लगातार मोबाइल पर खेलते रहने से बच्चे मोटे हो जाते हैं | फिर अचानक एक ने सुझाव दिया की क्यों व हम स्टेज पर एक पतले दुबले बच्चे को पहले मोबाइल पर खेलते दिखाकर उसके सामने चादर से ढंककर पीछे एक मोटे बच्चों को बिठाकर फिर चादर हटाकर मोबाइल पर खेलते दिखा दें | इससे बात आसानी से समझ में आ जाएगी एवं बच्चों को मजा भी आयेगा | ऐसी छोटे छोटे निर्णय में सुझाव लेकर उन्हें अमल में लाने से बच्चों में नए कार्यों को करने एवं नए सुझावों को देने हेतु प्रेरणा मिलेगी | बच्चों को खुलकर अपनी रचनात्मक कौशल को सामने लाने का अवसर मिलने लगेगा |

इसी प्रकार एक बार मुझे चन्द्रमा के बारे में पढ़ाना था | मैंने चन्द्रमा में जमीन का वर्णन किया कि वहां की जमीन कैसी होती है | कुछ रोचक तथ्य भी बताए जैसे चंद्रमा में हवा नहीं होती, बहुत बड़े-बड़े गड्ढे एवं पहाड़ होते हैं | धूल होती है लेकिन हवा नहीं चलती | अभी भी वहां नील आर्म स्ट्रोंग के पैरों के निशान वैसे के वैसे पड़े हुए हैं | क्यों अभी तक वैसे के वैसे पड़े होंगे ? चन्द्रमा से जुड़ें कुछ तकनीकी शब्द भी बताए फिर उन्हें यह कल्पना करने को कहा की चलो हम सब ऐसा सोचें कि हम सभी चंद्रमा की सतह पर खडे हैं अब आगे बातचीत करो | बच्चे भी खूब मजे ले लेकर सभी तकनीकी शब्दों को इस्तेमाल में लाकर अलग-अलग बच्चों द्वारा की जा रही गतिविधियों का वर्णन करने लगते हैं | गुरुत्वाकर्षण के अभाव में किस प्रकार वे तैर रहे हैं, अभिनय कर बताते हैं | गुरुत्वाकर्षण के अभाव में परेशान होते बच्चों या मजा ले रहे बच्चों के अलग अलग अनुभवों को जैसा उन्होंने बताना शुरू किया कि ऐसा लगा कि शायद ही कभी वे चन्द्रमा की धरातल की जानकारी भूल पाएं | फिर मैंने अपनी मोबाइल से चन्द्रमा की धरातल के कुछ वीडियोज भी उनको दिखाए |

चर्चा –

१- अपने संकुल की शालाओं में बच्चों को अपने रचनात्मक कौशलों को सामने लाने हेतु हमें क्या क्या करना चाहिए ?

२- जिस प्रकार चन्द्रमा को पढ़ाने के लिए रोचक विधि का इस्तेमाल किया गया, वैसे ही हम और कौन कौन से प्रकरण को पढ़ाने में ऐसी विधियों का इस्तेमाल कर सकते हैं?

३- आपके पास अपनी कक्षा के ऐसे कोई रोचक अनुभव हो, तो हमारे साथ अवश्य साझा करें |

४- अपने अनुभवों को नियमित रूप से लिखने की आदत भी डालें, इसका आगे लाभ मिलेगा |

एजेंडा # 5: बस्तर का विज्ञान मेला

बस्तर जिले में जिला प्रशासन की विज्ञान में सक्रियता को देखते हुए बस्तर जिले में पिछले वर्ष राज्य स्तरीय विज्ञान प्रशिक्षण का आयोजन किया गया था | बस्तर में विज्ञान सीखने में प्रयोगों को बढ़ावा देने हेतु शिक्षकों ने प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के माध्यम से काम करना शुरू किया | प्रतिदिन अलग–अलग शालाओं में कराए जा रहे प्रयोगों की जानकारी उन्होंने एक दूसरे से व्हात्सेप्प में साझा करना प्रारंभ किया | धीरे–धीरे जब इस कार्य में शिक्षकों एवं बच्चों को मजा आने लगा तो जिले ने एक कीर्तिमान बनाने की सोची | बस्तर जिले के सात विकासखंडों के कक्षा छठवीं से लेकर ग्यारहवीं तक के लगभग 35 हजार से अधिक बच्चों ने एक ही दिन में एक साथ कबाड़ से जुगाड़ कर 35 हजार से अधिक प्रयोगों का प्रदर्शन किया| बस्तर में हुए इस कार्य के आधार पर इस घटना को गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड में नाम दर्ज कराने की दिशा में कार्य चल रहा है | टीम बस्तर को ढेर सारी बधाइयाँ और शुभकामनाएं !

कुछ प्रयोग जो बस्तर में बच्चों ने स्वयं किया–

बिना फूंके गुब्बारा कैसे फुलाए ? बोतल शावर आलू को तैराइए जलती मोमबत्ती पानी पर तैराना
अग्निशामक रबर बैंड कम्पन पानी ऊपर क्यों चढ़ता है ? फायर प्रूफ गुब्बारा
सुई को चुम्बक बनाना रेटिना पर तस्वीर उल्टी क्यों बनती है ? कागज़ जलेगा नहीं
संतरे के छिलके से ईंधन तीलियों का तारा बोतल से बादल आटोमैटिक साइफन
तंबाखू सिगरेट का प्रभाव फव्वारा गैस में प्रसार तडित चालक
पवन चक्की स्ट्रीट लाईट का जलना बायो गैस संयंत्र पाचन तन्त्र
ठोस में उष्मा का संचालन जेसीबी बाँध की दीवार नीचे चौड़ी क्यों ?
कागज़ की जीप घड़े में मछली हवा में भार मोमबत्ती जलने में सहायक हवा

क्या ऐसे कुछ कार्यक्रम हम अपने संकुल या ऊपर के स्तर पर आयोजित कर सकते हैं ?
आपस में चर्चा कर ऐसे कुछ शैक्षिक रूप से उपयोगी कार्यक्रम अपने यहाँ भी आयोजित करने का प्रयास करें |

एजेंडा # 6: कक्षा में पीछे छूट रहे बच्चों की शिक्षा

आप अपनी कक्षा में बहुत अच्छा पढ़ाते हैं ? सभी बच्चों के साथ खूब मेहनत करते हैं | लेकिन कक्षा में कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जिनके साथ कितना भी मेहनत कर लो, उनकी समझ में कुछ नही आता | ऐसे बच्चों में कुछ को तो पढ़ने में बिलकुल भी रूचि नहीं होती और कुछ को तो कितना भी पढ़ने की कोशिश करें, समझ में नहीं आता | हम इस एजेंडा में ऐसे बच्चों की बात करेंगे जो सीखना तो चाहते हैं पर सारी कोशिशों के बावजूद सीख नहीं पाते हैं |

- आपने ऐसा नल देखा होगा जिससे बूंद बूंद कर पानी व्यर्थ बहता रहता है | ऐसे नल जिस टंकी से जुड़े होते हैं उन्हें वे कुछ घंटों में खली कर देते हैं |
- आपने ऐसे बिजली की लाइन देखी होगी जिसे बीच में चूहों द्वारा भीतर ही भीतर कुतर दिया गया होगा | क्या ऐसी लाइन से बिजली आगे बढ़ सकेगी ?
- आपने ऐसी सायकल देखी होगी जिसके स्पोक टेड़े–मेढे होने से चक्का डगमगाता रहता होगा | ऐसे साइकल को चलाकर क्या आप तेजी से आगे बढ़ सकते हैं ?

कुछ ऐसा ही हमारी कक्षाओं में कुछ बच्चों के साथ हो सकता है | वे मेहनत तो करना चाहते हैं और करते भी हैं पर उनकी मेहनत सही दिशा में अपेक्षित परिणाम नहीं दे पाती |

बच्चों में ऐसी गड़बड़ियाँ प्राय: तब होती हैं जब उनका तंत्रिका तंत्र ठीक से कम नही कर पाता एवं इन तंत्रों का ठीक से विकास नही हो पाता | ऐसे बच्चों की पहचान इन लक्षणों के आधार पर की जा सकती है –

शब्दों को उल्टा पढ़ना जैसे b **को** d, p **को** q या पलट कर पढ़ना जैसे u **को** n, w **को** m आदि |

ऐसे बच्चों को पढने–लिखने, गणित एवं भाषा संबंधी बहुत सी कठिनाई हो सकती है |

ठीक से नक़ल नहीं कर पाना, पढ़ते समय जम्हाई लेना, जल्दी–जल्दी जगह भूल जाना, शब्दों में अंतर नहीं समझना, लाइनों को दोबारा पढ़ना या छोड़ देना, शब्दों को दिखाने पर नहीं पहचान पाना आदि |

कक्षा में ऐसे बच्चों की पहचान जल्दी से करते हुए शुरू से ध्यान देने पर इन्हें अन्य बच्चों के समान सामान्य स्तर पर लाया जा सकता है | इस हेतु निम्नानुसार कुछ प्रयास किए जा सकते हैं –

- ऐसे बच्चों की रूचि के क्षेत्रों को ध्यान में रखकर उनकी रूचि सीखने की ओर विकसित करने की दिशा में कार्य करें | स्कूलों में विशिष्ट सुधारात्मक कार्यक्रम लागू करवाएं | सीमित निर्देश देने का प्रयास करें |
- ऐसे बच्चों को छोटे – छोटे कार्य देते हुए, उनके संपन्न होने पर प्रोत्साहन एवं बधाई देवें |
- अभिभावकों से संपर्क कर घर पर बच्चों के साथ व्यव्हार में ध्यान दिए जाने योग्य बातों को साझा करें |
- मदद के लिए इस क्षेत्र के विशेषज्ञों/डॉक्टर्स से भी सलाह–मशवरा करवाने में सहयोग करें |
- ऐसे बच्चों को श्यामपट के समीप बिठाएं | शिक्षक–विद्यार्थी संपर्क समय को भी बढाया जाए |
- ऐसे बच्चों की व्यक्तिगत कठिनाइयों को यथाशीघ्र दूर करने का प्रयास करें | हीन भावना आने न दें |
- समय समय पर मौखिक परीक्षा लेने का प्रयास करें | समय समय पर उचित परामर्श की व्यवस्था करें |
- शासन स्तर पर ऐसे बच्चों को विशेष प्रोत्साहन एवं छूट देने का प्रयास करवाएं |
- ऐसे बच्चों को अन्य सामान्य बच्चों के साथ ही अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था करें |

एजेंडा # 7: मातृभाषा दिवस का आयोजन

इस सत्र में आपने अभी तक बहुत से दिन मनाएं होंगे | कौन–कौन से दिन अभी तक शाला में आप लोगों ने मनाये हैं, उस पर चर्चा कर एक सूची बनाने की कोशिश करें | हमारे साथ भी इस सूची को साझा करें |

इस दिवसों के आयोजन के बाद क्या आपने उस दिवस के महत्त्व को, उद्धेश्य अनुरूप आगे भी काम किया हैं, इस पर ज़रा विचार करें और आगे इन दिवसों को मनाने के बाद वर्ष भर क्या क्या फोलो अप करना चाहिए, सोचें ?

माह फ़रवरी में **दिनांक 21.02.2017 को मातृभाषा दिवस** के रूप में आयोजित किये जाने सम्बन्धी निर्देश भारत सरकार की और से प्राप्त हुआ है |

इस मातृभाषा दिवस को मनाये जाने के पीछे निम्नलिखित उद्धेश्य हैं –

- भारत में भाषाई विविधताओं को सामने लाना |
- अपनी मातृभाषा के साथ साथ अन्य भाषा को भी इस्तेमाल करने हेतु प्रोत्साहित करना |
- भारत की सांस्कृतिक विविधता, साहित्य, कला, लेख एवं अन्य प्रकार की विविधताओं से अवगत कराना|
- मातृभाषा के साथ–साथ अन्य भाषाओं को सीखने हेतु प्रोत्साहित करना |

इस दिवस को आयोजित करने हेतु निम्नलिखित गतिविधियाँ शालाओं में आयोजित करवाई जा सकती हैं –

- मातृभाषा में गीत, कविताएँ, निबंध, चित्रकला प्रतियोगिताएं |
- नाटक, प्रदर्शनी, संगीत, कला प्रतियोगिताएं |
- भाषाई एवं सांस्कृतिक विविधताओं को प्रदर्शित करने हेतु फैंसी ड्रेस एवं अन्य प्रतियोगिताएँ |

उपरोक्त के अलावा सभी शालाओं में शिक्षक अपनी शाला में बच्चों द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं में दिन प्रतिदिन उपयोग में आने वाले शब्दों, वाक्यों, निर्देशों को डिक्शनरी के रूप में बड़ी कक्षाओं के बच्चों, माताओं, पालकों, स्व–सहायता समूहों के सदस्यों के सहयोग से तैयार कर अपनी शाला में रखेंगे | इस डिक्शनरी का उपयोग वे बच्चों की मातृभाषा में कुछ शब्दों वाक्यों का उपयोग कर उनसे बेहतर संबंध बनाने के लिए कर सकेंगे |

कृपया उपरोक्तानुसार अपने संकुल में इस कार्य के लिए विशेषज्ञ लोगों की एक टीम बनाकर ऐसे प्रोफेशनल लर्निंग कम्यूनिटी के माध्यम से यह कार्य संपन्न कराते हुए प्रत्येक शाला में ऐसी डिक्शनरी जिसका नियमित उपयोग शिक्षक कर रहे हों, रखने की व्यवस्था करेंगे | **इसके लिए कोई बेहतर नाम भी सुझाएँ अपनी–अपनी भाषा में !**

इसके अलावा माह फरवरी में एक और महत्वपूर्ण दिवस है– **विज्ञान दिवस** | पता करें कि यह कब मनाया जाता है और अपने संकुल के साथियों विशेषकर विज्ञान से जुड़े प्रोफेशनल कम्युनिटी के सदस्यों के साथ बैठकर यह तय करें कि इस दिवस को कैसे मनाना है जिससे बच्चों में विज्ञान विषय में रूचि विकसित किया जा सकें | तय कर की जा रही गतिविधियों से व्हात्सप्प पर अपने अन्य साथियों से भी साझा करें |

एजेंडा # 8: हम आपस में जुड़ चुके हैं अब आगे इसे कैसे लेकर जाएं ?

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत गत वर्ष दो महत्वपूर्ण प्रक्रियाएं शुरू हुई हैं | पहला, शिक्षकों ने अपना अपना प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी बनाना शुरू किया है | दूसरा शालाओं में माताओं का उन्मुखीकरण कर उन्हें शाला से जोड़ा गया है | ये दोनों प्रक्रियाएं अपने आप में बहुत ही महत्वपूर्ण हैं और सही तरीके से चलाया जाए तो शालाओं में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकती है और राज्य में शिक्षा के स्तर को बेहतर कर सकती है |

शिक्षा सचिव महोदय श्री विकास शील जी ने संकुल समन्वयकों को संबोधित करते हुए यह सुझाया है कि प्रत्येक विभाग या सेक्टर में कुछ लोग काम करने वाले होते हैं, कुछ काम न करते हुए दूसरों को काम करते देख मजा लेते रहते हैं | इन दोनों प्रकार के बीच में बड़ी संख्या में लोग होते हैं | वे यह देखते हैं कि किसको फायदा हो रहा है, किसको काम न करने के बावजूद कुछ नहीं हो रहा है | ऐसे लोग जहां कुछ हो रहा है उस दिशा की ओर पलट जाते हैं | आपके क्षेत्र में ऐसे लोग जो अच्छा कर रहे हैं, उनका फायदा कीजिए, उनकी तारीफ़ कीजिए, उन्हें आगे बढ़ने में मदद दीजिए | ऐसा करने पर बीच के लोग जो किस ओर जाना चाहिए, वे आपकी टीम में अच्छा काम करने वालों की तरफ आकर्षित होंगे | ऐसा करते हुए अपनी टीम में अधिक से अधिक काम करने की मानसिकता वालों को लाने का प्रयास करें |

ऐसा हमे आपके प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के साथ भी करना होगा | उन्हें आगे बढ़ाना होगा | उनके अच्छे कामों को सामने लाना होगा | प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के साथ निम्नलिखित काम कर लेवें–

- अपने प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी का एक नाम रखें जिनसे इसके गठन के उद्देश्य समझ में आ सके |
- अपने प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के लिए एक मिशन स्टेटमेंट भी तय करें ताकि भटकाव न हो |
- इसमें सामान विचारधारा वाले शिक्षक बंधुओं एवं अन्य सक्रिय लोगों को भी शामिल करें | इन सबका एक व्हात्सेप्प या कोई ग्रुप बना सकते हैं और अपने ऐसे सदस्य जो इनका उपयोग करते हों, उन्हें जोड़ें |
- प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी में विषय शिक्षण एवं कक्षा अध्यापन एवं सीखने की दिशा में कार्य करना तय करें |
- अपने सदस्यों के साथ नियमित रूप से अपने नवाचार, कक्षा में किए जा रहे कार्य, अकादमिक समस्याएँ या शिक्षा से जुडी महत्वपूर्ण जानकारियाँ शेयर करना जारी रखें |
- अपने साथियों की सहमति से कोई कार्यशाला, सेमीनार आदि का आयोजन मिलकर कर सकते हैं |
- अपने क्षेत्र में प्रशिक्षण आवश्यकताओं के लिए स्त्रोत दल का गठन कर प्रशिक्षण सामग्री, प्रशिक्षण स्तर आदि आयोजन करने की दिशा में भी पहल कर सकते हैं |

इसी प्रकार आपकी शालाओं में अब माताएं जुड़ चुकी हैं और अधिकाँश जगह उनमे जोश है | उन्हें शाला में जोड़ने के लिए आप लोगों ने जलेबी दौड़, कुर्सी दौड़, बोरा दौड़, लोक नृत्य और न जाने क्या–क्या आयोजन अपनी शालाओं में आपने करवाया होगा | आपके द्वारा भेजे गए फोटोग्राफ्स सभी देख पा रहे हैं | इस जोश को बनाए रखने एवं उनके सहयोग से शाला में पढाई में सुधार करने हेतु उनका सहयोग कैसे लिया जा सकता है, इस पर मंथन कर इस लगाव, जुड़ाव को आगे बढाएं वरना पूरी मेहनत बेकार जा सकती है |

याद रखें कि अच्छा वायरस बहुत जल्दी फैलता है | इसे शीघ्र फैलाने में मदद करें | फिर देखिए आपके सहयोग से इन अच्छे वायरस के सहयोग से आप शिक्षा में क्या–क्या सुधार बड़ी आसानी से कर सकेंगे |

एजेंडा # 9: LOTS and HOTS

एक प्रोफेशनल समूह के सदस्य ने पोस्ट किया– "रायपुर के सब्जी बाजार में टमाटर के दाम गिरने से किसानों ने टमाटर को विरोध के रूप में सड़कों पर फेंक दिया |" इस घटना को अपनी कक्षा में समझाते हुए बच्चों से पूछा गया – "यदि आप लोग इन किसानों की जगह पर होते तो क्या करते ?" बच्चों से जवाब आ रहे हैं ! मजा आ रहा है !

इस पोस्ट को देखने पर एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया आई कि यह एक Higher Order Thinking question का उदाहरण है | और आपके अच्छे पोस्ट को सभी व्हात्सेप्प समूह में भेजने की अपनी आदत में लग गया और साथ में ऐसे प्रश्न पूछने वाले शिक्षक की तारीफ़ भी कर दी | इसी बीच ऐसे प्रश्न पूछने वाला शिक्षक कुछ नाराज हो गया | क्या सर मुझे लगा आप प्रोत्साहित करोगे, आप तो.... | मुझे पहले आश्चर्य हुआ कि समझ में गलती कहाँ और कैसे हो गयी | बाद में बातचीत के बाद मामला शांत हो गया | पर मुझे हमारी गलती का अहसास हुआ | हमारे शिक्षकों को अभी तक हम ठीक से HOTS एवं LOTS के बारे में नहीं समझा पाए हैं | इसलिए इस अंक में इस मुद्दे पर जानकारी दी जा रही है |

LOTS का मतलब होता है Lower order thinking skills.

HOTS का मतलब होता है Higher order thinking skills.

जब हम बच्चों को साधारण सवाल पूछते हैं जो याद करने, समझ से एवं व्यवहार में उपयोग से जुड़े होते हैं तो ऐसे प्रश्नों को LOTS से संबंधित माना जाता है | यह एक प्रकार से सतह पर तैरने के सामान होता है |

इसके विपरीत जब हम बच्चों से कुछ ऐसे सवाल पूछते हैं जिसमे उन्हें एनालिसिस, मूल्यांकन एवं कुछ सृजन करने का अवसर मिलता है तो ऐसे प्रश्नों को हम HOTS के अंतर्गत मानते हैं | यह एक प्रकार से पानी के अन्दर गहराई में डुबकी लगाने जैसा होता है |

LOTS के अंतर्गत मुख्य रूप से wh questions **जैसे** who, what, when, where, Do you know, can you identify, name…, list.. से शुरू होने वाले प्रश्न पूछे जाते हैं |

HOTS का उपयोग मुख्यतः इन क्षेत्रों में किया जाता है –

अनुमान लगाने में	कार्य कारक प्रभाव जानने में	तर्क करने में
सरल क्रम से जमाने में	समस्या समाधान करने में	वर्गीकरण करने में
तुलना में विभेद करने में	संभावनाओं को तलाशने में	संबंध जोड़ने में
पैटर्न का विवरण देने में	संश्लेषण करने में	विभिन्न परिप्रेक्ष्य जानने में

शिक्षकों के लिए HOTs के कुछ उदाहरण–

- स्कूलों में सीखने को नुकसान पहुंचाए बिना आनंद का केंद्र कैसे बनाया जा सकता है ?
- आपको किसी भी विभाग में काम करने का एक अवसर दिया जाए तो आप कौन सा विभाग चुनना पसंद करोगे और क्यों ?

आपस में चर्चा कर बच्चों के लिए अलग–अलग विषय में कुछ H O T S से संबंधित प्रश्न ढूंढकर सभी के साथ साझा करें | पूछने पर बच्चों के जवाब किस प्रकार से आ रहे हैं ? आपके क्या अनुभव हैं ? किस प्रकार के उत्तर प्राप्त हो रहे हैं ? लिखें और साझा करें |

एजेंडा # 10: मोतीन– लड़कियों की शिक्षा के लिए हीरो

लड़कियों को स्कूली शिक्षा उपलब्ध कराना बहुत महत्वपूर्ण है | लड़कियों को उनके सामने कुछ आदर्श प्रस्तुत करने से उन्हें पढ़ने में मन लगा रहेगा | आज हम ऐसे ही एक आदर्श से आपका परिचय कराना चाहते हैं | यह नाम है मोतीन ! जिन्हें इनके जिले में बालिकाओं की शिक्षा के लिए राजदूत बनाया गया है | मोतीन एक खेतिहर परिवार से है और प्रारंभिक शिक्षा से आगे बढ़ने से पहले ही सत्रह वर्ष की उम्र में उसकी शादी हो गयी | सात साल के तनाव भरे जीवन के बाद उसने पति से तलाक ले लिया | इसके बाद वह अपने माता–पिता के साथ खेत में काम करने जाने लगी | तभी उसे ओपन स्कूल के बारे में पता चला और उसने प्रथम के सहयोग से संचालित सेकण्ड चांस नामक कार्यक्रम में शामिल होकर ट्यूशन लेते हुए कक्षा दसवीं की ओपन परीक्षा में प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त किया | इसके बाद उसने कक्षा बारहवीं की परीक्षा भी मेहनत कर अच्छे अंकों से पास की | अभी वह रायपुर शहर में प्रथम के एक होस्टल में वार्डन के रूप में कार्य कर रही है | साथ ही कालेज की पढाई भी जारी है |

प्रथम व्दारा मोतीन को अमेरिका के विभिन्न शहरों में बालिकाओं की शिक्षा की आवश्यकता की जानकारी देने का अवसर मिला | मोतीन उन हजारों लड़कियों की अगवाई कर रही है जिन्हें माध्यमिक शिक्षा पूरी करने में बहुत दिक्कतें होती हैं | मोतीन ने किस प्रकार से अपने सामाजिक बहिष्कार जैसे हालात का सामना करते हुए जिद के साथ अपनी परिस्थितियों को बदला, जीने की संभावनाएं तलाशी और सफलता पाई |

क्या आपके आसपास ऐसे बच्चे हैं जो किसी न किसी कारण से शाला नहीं आ पा रहे हैं ? ऐसे बच्चों के लिए आप क्या कर सकते हैं ? कैसे इनको शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ा जा सकता है ? क्या हम ऐसे बच्चों को पूरी ईमानदारी से ऐसे बच्चों के लिए कोई ठोस प्रयास नहीं कर सकते ?

और अंत में जाते जाते –

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अंतर्गत जिलों में कुछ बेहतर, कुछ नया करने की होड़ है | परन्तु यदि हम निर्धारित कार्यक्रमों को बेहतर तरीके से लागू करने में अपनी ऊर्जा लगा दें इसके बदले कि पहले से कुछ नया करने एवं कुछ दिनों बाद उसे छोड़कर कुछ नया करने की चाहत, तो हम निश्चित रूप से सफलता की ओर अग्रसर होने लगेंगे | हम इस कोशिश में हैं कि हमारे शिक्षकों द्वारा शून्य निवेश पर किए जा रहे विभिन्न कक्षागत प्रक्रियाओं से जुड़े नवाचारों का दस्तावेजीकरण किया जाए | ये नवाचार सामुदायिक सहभागिता, बाल संसद, शिक्षक प्रशिक्षण, अंग्रेजी अध्यापन, सहायक सामग्री का चयन, कोमिक स्ट्रिप के माध्यम से अध्ययन–अध्यापन, तकनीकी का उपयोग कर सिखाना, बच्चों का अखबार, सीसीई आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों से हो सकते हैं | प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी को प्रोत्साहित करते हुए उनके व्दारा किए जा रहे बेहतर नवाचारों का अपने जिले में दस्तावेजीकरण का काम कोई भी स्व–पहल करते हुए जिम्मेदारी ले सकते हैं |

पिछले चर्चा पत्रों में हमने आपसे जिले में Do it yourself cards तैयार करने हेतु अनुरोध करते हुए सुझाव दिया था | इन काड्र्स में विज्ञान सिखाने, सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के आधार पर उनमे निहित विज्ञान को सामने लाते हुए उनका विवरण इन काड्र्स के माध्यम से मुद्रण तैयार कर देना है | पिछले अंकों में आपसे अपेक्षित विभिन्न कार्यों को भी एक बार देख लेवें ताकि इन छूटी हुई चीजों को तत्काल पूरा कर लेवें |